Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वेदों में स्त्री माहात्म्य

डॉ. रागिनी श्रीवास्तव*

* असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत) शशि भूषण बालिका डिग्री कॉलेज, लखनऊ (उ.प्र.) भारत

प्रस्तावना – विद् धातु से उत्पन्न वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान। 'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभ्यन्ते वा एभिर्धर्मादि पुरुषार्था:' अर्थात वेद धर्म,अर्थ, काम,मोक्ष रूप पुरुषार्थों की प्राप्ति का सशक्त माध्यम है। आम्नाय,आगम,श्रुति आदि नामों से भी वेदों को अभिहित किया जाता है। वेद ईश्वर द्धारा रचित हैं, अपौरुषेय हैं,नित्य हैं और असीम ज्ञान के अनंत भंडार हैं। मानव जाति के हित के लिए ईश्वर ने ऋषियों के अंत:स्तल में इन्हें उद्धाटित किया।

वेदों का काल अत्यंत समृद्ध, विकसित और उन्नत समाज को परिलक्षित करता है और जब हम किसी भी समाज की प्रगति,उन्नति,सुव्यवस्था की बात करते हैं तो उसके परिप्रेक्ष्य में कहीं ना कहीं स्त्री की परोक्ष और अपरोक्ष रूप से भूमिका को स्वीकार करना जरूरी हो जाता है। आदिकाल से ही स्त्री को शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। जब स्त्री की उत्पत्ति ही तेज से शक्ति रूप में हुई हो तो स्त्री की महत्ता स्वयं ही प्रकट हो जाती है–

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति–रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।

दुर्गा सप्तशती

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।।

मनुस्मृति 3/56

मनुस्मृति का यह वाक्य वेदों में स्त्रियों की सम्माननीय गौरवमयी स्थिति को दर्शाता है। उनकी महत्ता हर क्षेत्र में सम्माननीय रूप में स्वीकार की गई है। वेद में स्त्री की शिक्षा, शालीनता,गुण,कर्तव्य, अधिकार का अत्यंत सुंदरता पूर्वक विवेचन प्राप्त होता है। वेद स्त्रियों को साम्राज्ञी,शासक, यज्ञीय अर्थात पूजनीय रूप में स्वीकार करते हैं।

वेदों में 'स्त्री' शब्द को मात्र महिला या औरत के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है, बल्कि उसे विस्तृत और सम्मानजनक रूप में प्रस्तुत किया गया है। वेदों में स्त्री को ज्ञान, शक्ति,देवी और सृजनकत्री के रूप स्वीकार किया गया है।

वेदों में स्त्री को तेज युक्त, ज्ञान प्रदान करने वाली,सुख ऐश्वर्य प्रदात्री,तेज युक्त, विदुषी, उषा,इंद्राणी,सरस्वती आदि अनेक अभिधानों से अलंकृत किया गया है। वेद नारी के गौरवपूर्ण अस्तित्व को विभिन्न प्रकार से प्रकट करता है।

ऋग्वेद में स्त्री को ब्रह्म पद से सुशोभित किया गया है–

'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'

(ऋग्वेद 8.33.19)

यहां पर स्त्री को सृजनात्मक शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। ब्रह्म का अर्थ ज्ञान,बुद्धि,एवं सृजनात्मक शक्ति से है अर्थात ज्ञान विज्ञान में पुरुष के समान ही पारंगत होने के कारण स्त्री ब्रह्म है।यह वाक्यांश स्त्री के महत्व और शक्ति को प्रकाशित करता है।

इसी क्रम में 'अयमाकाश: स्त्रियां पूर्यते' (बृहदारण्यक उपनिषद 1.4.3) मंत्र स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रकट करता है।

वेदों में नारी को घर कहा गया है–'जायेदस्तम्' । 'जाया' का अर्थ है पत्नी और 'अस्तम्' का अर्थ है घर अर्थात् पत्नी ही घर है। (ऋग्वेद 3.53.4)

वेद काल में अनेक ऋषिकाएं हैं जिन्होंने वैदिक धर्म की ध्वजा फहराकर समाज को आध्यात्मिकता और नैतिकता के पाठ पढ़ाये। आपला, घोषा, सरस्वती, सूर्या,अदिति,लोपामुद्रा, आत्रेयी, सर्वराज्ञी, सावित्री दाक्षायणि, विश्ववारा आदि अनेक नाम है जिन्होंने शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में तत्कालीन स्त्री के महत्वपूर्ण स्थान को निर्धारित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

तत्कालीन स्त्री अध्ययन अध्यापन तक की सीमित नहीं थी अपितु उसे रण क्षेत्र में जाने तथा शासक के रूप में भी स्वीकार किया गया।

'स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे'

(ऋग्वेद 5.30.9)

यह मंत्र स्त्री के महत्व को ही दर्शाता है।

इसी क्रम में विश्पला नाम की वीरांगना स्त्री के घायल होने का विवेचन ऋग्वेद में प्राप्त होता है–

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् ।।

जिससे प्रतीत होता है कि स्त्रियों को युद्ध भूमि में अपना कौशल दिखाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

ऋग्वेद में उषा को आदर्श स्त्री के रूप में माना है और उषा से प्रसिद्ध की प्रार्थना की गई है जो स्त्री महत्व की परिचायक है–

माता देवानामदितेरनीकं
यज्ञस्यं केतुर्बृहती वि भांहि।
प्रशस्तिकृद्ब्रह्मणें नो व्युच्छा
नो जनें जनय विश्ववारे।।

(ऋग्वेद1.113.19)

अर्थात् हे देवों की माता और अदिति से प्रतिस्पर्धा करने वाली उषा! तुम यज्ञ का ज्ञापन और महत्व प्राप्त करती हुई प्रकाशित एवं हमारे स्त्रोत की प्रशंसा करती हुई उदित हो और हमें संसार में प्रसिद्ध बनाओ।

इसी तरह उषा रूपी स्त्री से पुरुष के लिए कल्याणकारी और धन प्रदान करने की कामना की गई है–

यच्चित्रमप्नं उषसो वहन्तीजानायं शशमानायं भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुंणो मामहन्तामदिति: सिन्धुं: पृथिवी उत द्यौ:।।

(ऋग्वेद 1. 113.20)

ऋग्वेद के दसवें मंडल का पच्चासीवां सूक्त विवाह सूक्त है, जिसमें सूर्य पुत्री सूर्या और सोम के विवाह का कथन है। विवाह सूक्त की द्रष्टा ऋषिका सावित्री सूर्या हैं।इसमें वर वधू के अखंड सौभाग्य की कामना की गई है। सूर्या सावित्री ने 47 मंत्रों में विवाह सूक्त लिखकर स्त्री माहात्म्य को स्वत: प्रकट कर दिया है। वेदों में स्त्री को साम्राज्ञी पद से विभूषित किया गया है–

साम्राज्ञी श्वशुरे भव साम्राज्ञी अधि देवृषु।
ननान्दुषु साम्राज्ञी भव साम्राज्ञी पत्ये इन्द्रस्य ।।

(अथर्ववेद 14.1.6)

अर्थात् पत्नी को अपने श्वसुर, देवर, ननद और पति के साथ साम्राज्ञी (समान अधिकार और सम्मान) का पद प्राप्त होना चाहिए। यह श्लोक स्त्री के महत्व और परिवार में उसकी भूमिका को तो प्रकट करता ही है साथ में यह पत्नी के कर्तव्यों,अधिकारों का वर्णन करता है और उसे परिवार में सम्मानजनक स्थान पर प्रतिष्ठित भी करता है।

वेदों में पिता की संपत्ति में भी स्त्री के अधिकार को स्वीकार किया है–

अमाजुरिव पित्रों सचां सती समानादा:

(ऋग्वेद 2.17.7)

अर्थात् 'पुत्री अपने पिता की संपत्ति में समान अधिकार रखती है, जैसे पुत्र।'

यह मंत्र स्त्री के अधिकारों और उनकी स्थिति को दर्शाता है, जिसमें उन्हें अपने पिता की संपत्ति में समान अधिकार प्राप्त है।

इसी प्रकार वेदों में अनेक स्त्रियों के महत्व से संबंधित उद्धरण प्राप्त होते हैं,जैसे–अपने सौभाग्य के लिए पति पत्नी का हाथ पकड़ता है–

गृह्णामिं ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्यां जरदष्टिर्यथास:।
भगों अर्यमा संविता पुरंन्धिर्मह्यंत्वादुर्गार्हपत्याय देवा:।।

(अथर्ववेद 14.1.50)

स्त्रियों में अपार शक्तिपुंज को वेदों ने स्वीकार किया है–

नारीणां शक्ति: सा नारीणां साहसं नारीणामोजो बलं च।
नारीणां सर्वमेव तत्।।

(अथर्ववेद 7.46.3)

अर्थात् स्त्रियों में शक्ति होती है, साहस होता है,ओज और बल होता है। स्त्रियों में यह सब कुछ होता है।

माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:

(अथर्ववेद 12.12)

वेद की यह उद्घोषणा स्वयं ही स्त्री माहात्म्य की प्रतिपादक है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

मनुस्मृति

अर्थात् जहां स्त्रियां दुखी रहती हैं वह कुल ही नष्ट हो जाता है। मनुस्मृति का यह उद्घोष स्त्रियों के महत्व को परिलक्षित करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य में स्त्री यशस्वी थी,आदरणीय और स्तुत्य थी,आवाह्न योग्य, सुशील एवं सम्माननीय पद पर स्वतंत्र रूप में प्रतिष्ठित थी और अर्धनारीश्वर की परिकल्पना को साकार रूप में उपस्थित करने में सक्षम थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. अथर्ववेद
4. सामवेद
5. वेदों में नारी का स्थान(डॉ. विवेक आर्य)
6. वेदों में नारी का महत्व (काजल पटेल)
7. वैदिक नारी(डॉ.रामनाथ वेदलंकार)
8. स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकांड में अधिकार (डॉ.धर्मदेव विद्यामार्तड)
9. मनुस्मृति
10. दुर्गा सप्तशती

****